IJAER/March-April-2025/Volume-14/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

# पंजाब विभाजन और साम्प्रदायिकता : ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ में

**डॉ॰ धीरज कौशिक**

सहायक आचार्य भगवान परशुराम कॉलेज कुरुक्षेत्र

**शोध सार :**

15 अगस्त 1947 को भारत का विभाजन विश्व इतिहास में रक्तरंजित विस्थापन की कहानी है। अंग्रेजों ने भारत का विभाजन भौगोलिक आधार पर ना करके धर्म के आधार पर किया था, जिसकी परिणीति धर्म व आस्था के आधार पर हिंसक, साम्प्रदायिक एवं विस्थापन में घटित अमानवीय क्रूरता की कहानी है। जिसमें बड़ी सँख्या में विस्थापन के कारण लोगों को अपना–अपना घर–परिवार छोड़कर ऐसे नये घर तलाशे जो उनकें लिए अजनबी एवं प्रतिरोधी थे।

**मुख्य बिंदु : विभाजन, विभीषिका, नृशंसता, बर्बरता, बलात्कार, विस्थापित, साम्प्रदायिकता, गृहयुद्ध, अपहरण, अराजकता**

**भूमिका :**

मानव समाज में अनेक ऐसी घटनाएँ घटित होती है जो कभी पुरानी नहीं पड़ती, समय के साथ इनकी पुनरावृत्ति होती रहती है। इनकी पीडा के जख्म कभी भरे नही जा सकते। भारत का विभाजन एक ऐसा ही स्थायी जख्म है। यह एक ऐसी विभीषिका है, जिसके जख्म आज तक पूरी तरह भर नहीं सके है, जो आज भी जनमानस के हृदय में नासूर बनकर टीसती रहती है। भारत विभाजन ने भविष्य की अनेक पीढ़ियों की जिन्दगी को बदलकर कर रख दिया। विभाजन की सबसे विभीषिका विस्थापन के रूप में हुई। मानव इतिहास में इतने बड़े स्तर पर आबादी की अदला–बदली कभी नहीं हुई थी। करोड़ों लोगों को इस विस्थापन के कारण अपना–अपना घर–परिवार छोड़कर दर–बदर होकर नारकीय जीवन जीने को अभिशप्त होना पड़ा। इस लेख का उद्देश्य भारत विभाजन पर लिखे गए साहित्य के माध्यम से विभाजन के दौरान उत्पन्न स्थितियों में घटित

हत्याकांड नृशंसता, बर्बरता, बलात्कार और विस्थापितों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया गया है।

**शोध उद्देश्य :**

- विभाजन के लिए उतरदायी साम्प्रदायिक कारणों की समीक्षा करना।
- विभाजन पर आधारित विभिन्न भाषाओं के उपन्यासों में घटित साम्प्रदायिक घटनाओं का विश्लेषण करना।
- विभाजन के दौरान स्त्रियों की शारिरीक व मानसिक उत्पीड़न का विश्लेषण करना।
- ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ में वर्णित हत्याकांड नृशंसता, बर्बरता, बलात्कार और विस्थापन की दयनीय स्थिति का विश्लेषण करना।

15 अगस्त 1947 में मिली भारत की स्वतंत्रता ब्रिटिश राज के खिलाफ भारत के लोगों द्वारा किये गये निरन्तर संघर्ष का परिणाम थी। हालांकि आजादी का दूसरा पक्ष भारत का विभाजन था। जो मानव इतिहास की क्रूरतम और अमानवीय घटनाओं में से एक थी। भारत का विभाजन वस्तुतः पंजाब और बंगाल का विभाजन था।[1] 1947 में पंजाब साम्प्रदायिक दंगों का विभिन्न लोगों द्वारा अलग–अलग वर्णन किया गया है। इयान स्टीफेंस इन दंगों को गृहयुद्ध का नाम देते हुए कहते है 'यदि गैर–सैन्य नरसंहार और हंगामे के कारण लगभग 5 लाख लोगों की मौत हुई है तो इसे गृहयुद्ध नहीं कहा जा सकता, लेकिन यह अनुमान लगाना कठिन है कि यह क्या हो सकता है। ह्यूग थिंकर के अनुसार दंगों में बड़ी संख्या में लोग शामिल थे और वह इन दंगों को **'पीपुल्स वॉर'** की संज्ञा देते है। माइकल ब्रेचर विभाजन को **उत्तराधिकार का युद्ध** कहते है । उनका मानना है कि यह शब्द अविभाजित पंजाब के अंतिम गर्वनर सर इवेन जेनकिन द्वारा पंजाब में साम्प्रदायिक दंगों को नामित करने के लिए पेश किया गया है।[2] इस दौरान बड़ी मात्रा में अराजकता, साम्प्रदायिक हिंसा, दंगे, सीमा के दोनों ओर से हत्या, अपहरण और बलात्कार की खबरें आई ।[3]

विभाजन की त्रासदी से भारत में रहने वाले अनेक धर्मों और संस्कृतियों के लोगों को संकट का सामना करना पड़ा। इस घटना ने भारतीय राजनीति और सांझी संस्कृति को जितना अधिक प्रभावित किया था। सम्भवतः अन्य किसी ओर घटना ने किया। हिन्दू मुसलमान सदियों से एक ही स्थान पर रहने के कारण भावात्मक रूप से एक–दूसरे जुड़े हुए थे। 1857 की क्रांति के पश्चात् अंग्रेजों ने अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए हिन्दू–मुसलमान एकता को तोड़ने का प्रयास किया। अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो नीति से रहस्योद्घाटन एक अंग्रेज कमाडेंट कर्नल कोक ने इस प्रकार किया है । 'हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम पूरी ताकत के साथ विभिन्न धर्मों और जातियों के बीच मौजूदा भेदभाव को बने रहने दे। हमें यह भेदभाव समाप्त करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। फूट डालो राज करो ही भारतीय सरकार का सिद्धान्त होना चाहिए।[4]

1946 तक पंजाब व उत्तर भारत के अधिकांश हिस्सों में मानसिक उन्माद व भयानक मार–काट आम बात हो गई थी। यह ध्रुवीकरण राजनीतिक पहचान के एकपक्षीय रूप में पूर्ण विश्वास व अलगाव के गहरे व संपूर्ण अनुभव पर निर्भर था। यानि 'यदि आप हमारे साथ नहीं है तो इसका मतलब आप हमारे खिलाफ है।' इस तरह प्रतिक्रिया व आक्रामक हमले की तैयारी का बोध लोगों में इस कदर था कि कोई बौद्धिक व्यक्ति भी इसमें उलझा जाए।[5]

जब देश के अधिकतर भागों में आजादी का जश्न मनाये जा रहे थे, ठीक उसी समय हजारों काफिलें लाहौर, मुल्तान, लायलपुर और स्यालकोट शहरों से भारत की तरफ बढ़ रहे थे। उनके लिए जश्न के कोई मायने नहीं थे। उनके लिए तो पग–पग पर मौत का साया मंडरा रहा था। रास्ते में क्या हो जाए, कोई कुछ नहीं जानता था। मोहल्ले के मोहल्ले धू–धू कर जल रहे थे।[6] एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया था कि उन दिनों पंजाब में लाशों की दुर्गन्ध फैली हुई थी तथा सड़कों, रेलवे स्टेशनों व घरों की दीवारों पर खून के धब्बे चारों तरफ दिखते थे। बहावलपुर स्टेट के हासिलपुर में घटी एक घटना में पठानों के एक गिरोह ने लगभग 350 लोगों को राइफलों से भून डाला था। इस घटना के बाद पेंडेरेल मून ने इसमें एक साम्य ढूंढने का प्रयास किया था। वहां

पुरुष, महिलाएं और बच्चे सब एक साथ अटे पड़े थे। उनके हाथ पैरों के हाव–भाव इस कदर किसी जिन्दा इंसान के समान थे कि कोई मुश्किल से विश्वास कर पाए कि वे वाकई मृत थे। इसे देखकर मेरे दिमाग में बचपन में नेपोलियन के युद्ध मैदानों के देखे वे चित्र ताजा हो गए ।[7]

विभाजन के पश्चात् पंजाब में हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिकता इतने चरम पर थी कि मुस्लिम पुलिस अधिकारियों के द्वारा हिन्दू पुलिसकर्मियों को जिन्दा आग में फेंका गया। रामलाल कोटली, पाकिस्तान ने पा×चजन्य को दिये साक्षात्कार में कहते है कि रामपुर में मुसलमानों ने एक जगह आग लगा रखी थी और जो भी हिन्दू मिलता था जिन्दा या मरा, उसे आग में डाल देते थे। पुलिस हिन्दुओं की सुनती भी नहीं थी। इस कारण हिन्दू पलायन कर भारत आने लगे ।[8]

विभाजन की सबसे क्रूर त्रासदी स्त्री समुदाय को भोगनी पड़ी। मानसिक और शारीरिक दोनों स्तरों पर यह त्रासदी अधिक तीव्र थी। उर्वशी बुटालिया ने बिल्कुल सही कहा है कि पंजाब के विभाजन के दौरान महिलाओं के अनुभवों की तुलना में भारत विभाजन पर लगभग कोई ध्यान नहीं दिया गया है। नारीवादी इतिहासलेखन में इस बात पर जोर दिया गया है कि यदि आधी आबादी के अनुभव और स्थिति विभाजन की कहानी अविभाज्य हिस्सा है, तो एक प्रतिनिधि कहानी लिखी जा सकती है परन्तु जब गृहयुद्ध की स्थिति होती है तो क्षेत्रों में महिलाओं को एक ऐसा क्षेत्र माना जाता है जिस पर कब्जा करने की आवश्यकता होती है।[9]

विभाजन के दौरान हिन्दू, सिक्ख तथा मुस्लिम परिवार की महिलाओं को आतंक और हिंसा का सामना करना पड़ा था। मार्च 1947 में ही महिलाओं के प्रति साम्प्रदायिक हिंसा शुरू हो गई थी, जब रावलपिंडी जिले के सिक्ख गांवों थामली, थोआ खालसा, डोबेरन कल्लार में अपहरण और बलात्कार के कई मामले सामने आए थे। अप्रैल 1947 में प्रकाशित मुद्रित पुस्तिका में महिलाओं की पीड़ा का दयनीय वर्णन किया। 'सैंकड़ों महिलाओं का अपहरण कर लिया गया है, महिलाओं ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए कुओं में छलांग लगा दी और अपने जीवन का बलिदान दिया।[10] प्रतिद्वंद्वदी समुदाय के

पुरुषों ने अपमानजनक व्यवहार के लिए महिलाओं को जिम्मेवार ठहराया । सीमा के दोनों तरफ से दंगे, हत्याएं, अपहरण और बलात्कार की खबरे आई । विभाजन के इस आघात के दौरान पंजाब में महिलाओं को इन सारे अपमान का सामना करना पड़ा। महिलाओं को अपमानित करने के लिए अपनाए गए कुछ तरीकों में उनको स्तनों को काटना और शरीर पर दूसरे धर्म के चिन्हों के टैटू बनवाना, नग्न महिलाओं को शहरों की सड़कों पर घुमाना और गर्भवती महिलाओं का जबरन गर्भपात कराना शामिल था।[11] जबरन धर्म परिवर्तन या अपहरण की गई महिलाओं को नेहरू का समर्थन प्राप्त था। उन्होंने 4 अप्रैल 1947 को महिलाओं के उचित बचाव के लिए सर इवान जेनकिन को सूचित किया था। नेहरु ने ये भी कहा कि अगर महिलाओं को ठीक से बचाया नहीं गया तो और अधिक समस्याएं बढ़ेगी।[12]

हिंसा का तांडव, अपहरण और बलात्कार जीवित और मृत लोगों का अंग–भंग और विकृतिकरण, महिलाओं की जबरन वसूली, इन सभी ने समाज के ताने–बाने को छिन्न–भिन्न कर दिया। विभाजन की जटिल कहानी, जनता के उजड़ने और विस्थापन की कहानी सीमाओं के दोनों ओर अवैध जबरन वसूली बलात्कार और असंख्य महिलाओं के अपहरण से बताई गई है।[13] अपहरण समस्या नहीं अपितु कुछ महिलाओं के लिए बचाव एक ओर समस्या थी। क्योंकि बहुत से अपहरण की गई महिलाओं की शादी हो चुकी थी और शुरूआती उथल–पुथल के बाद वे उस जीवन में ढल चुकी थी। वतन वापसी के समय उनमें से कई गर्भवती थी। हिन्दू समाज के रीति–रिवाजों ने उन्हें यह महसूस कराया कि उनके पुराने मकानों में उनके लिए कोई जगह नहीं है।[14]

विभाजन के दौरान महिलाओं का अपहरण आम बात हो गई थी। सभी समुदायों के पुरुष अपनी नैतिकता खो चुके थे। महिलाओं के अपहरण को उनके द्वारा बदले की कार्यवाही के रूप में व्याख्यायित किया गया । विभाजन के उपन्यासों ने उनकी उस शैतानी प्रवृति और क्रूरता को उजागर किया जिसके साथ महिलाओं से ऐसा व्यवहार किया जाता था।

बप्सी सिंघवा आइस मैन कैंडी में ऐसी ही घटना का वर्णन करते हुए कहते है कि वे अया को बाहर खींचते है और उसके नंगे पैर जो पीछे की ओर जाना जाते थे। उन्हें मजबूर किया जाता है। उसके होंठ उसके दांतों से दूर खींच लिये जाते है और उसके गले की वक्रता का विरोध करते हुए उसका मुंह मृतकों की तरह खुल जाता है, बच्चे की चीख कम हो गई । उसकी बैंगनी साड़ी कंधे से फिसल गई और उसकी साड़ी–ब्लाउज पर स्तन तनाव ग्रस्त हो गए, कपड़े को खींचते हुए ताकि सिलाई करते समय सिलाई दिखाई दे। उसकी बांह के नीचे एक आस्तीन फट गई, आदमी उसे अजीब कदमों से खींचकर गाड़ी तक ले गया और उनके कठोर हाथ, लापरवाह अंतरंगता के साथ उसका समर्थन करते हुए उसे उठा लेते है। चार आदमी उसके खिलाफ खड़े होते है, उसके शरीर को सीधा खड़े करते है, उनके होंठ विजयी मुद्रा में फैले होते है।[15]

विभाजन के बाद पितृसता ने महिलाओं के भाग्य का निर्धारण किया, अपहृत महिलाओं को कुछ मामलें में उनकी अनिच्छा के बावजूद 'बरामद किया गया और बहाल किया गया ।"[16] कई अपहृत हिन्दू और सिक्ख महिलाएं उनकी हिरासत में थी। अपहृत महिलाओं में से कई निजी घरों में गायब हो गई । एक अकेला मुस्लिम एक महिला को खींचकर ले गया और उसे अपने विशेष उपयोग के लिए रखा था वह उसकी सहमति से उसे ले गया । अन्य मुस्लिमों ने उसे इस्लाम में परिवर्तित कर दिया और उससे शादी कर ली। बाकियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया, कभी–कभी सार्वजनिक स्थानों पर और बड़ी सभाओं की उपस्थिति में। बलात्कार के बाद अन्य अत्याचार किए गए, स्तन काट दिए गए और यहां तक कि मौत भी दी गई, कई गर्भवती महिलाओं की कोखे खुली कर दी गई। बची हुई महिलाओं को बार–बार बलात्कार और अपमान के लिए रखा गया, जब तक उन्हें जीर्ण–शीर्ण मलबे में बांट दिया गया। वृद्ध, बचे हुए लोग जिन्हें पत्नी नहीं मिली या मुसलमान जो अतिरिक्त पत्नी चाहते थे।[17]

बलात्कार और महिलाओं के साथ छेड़छाड़ मानव सभ्यता के इतिहास में एक घिनौना अध्याय था। साहित्यकार उन हजारों महिलाओं के बारे में बात करते है जिन्हें अपूरणीय क्षति हुई थी और वे शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दोनों तरह से पूरी तरह से

क्षमता में है। बलात्कार को प्रतिद्वंद्वियों को नैतिक रूप से मारने के लिए हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया था। पुरुषों के सामने खुले तौर पर एक महिला के लिए और क्या बुरा हो सकता है? उसकी शादी चार दिन पहले हुई थी और उसकी दोनों बाहों में लाल लाख की चुड़ियों से ढकी हुई थी और उसकी हथेलियों पर सिन्दुरी मेहंदी का रंग था। भीड़ ने उससे प्यार किया। उसे चुड़ियां लेने की जरूरत नहीं थी, वे सभी टूट गए थे क्योंकि वह सड़क पर लेटी थी। एक आदमी और दूसरे द्वारा उसे ले जाया जा रहा था।[18]

विभाजन के दौरान महिलाओं की पीड़ा के अन्य पहलुओं में, शायद सबसे भयानक बात थी उन्हें नग्न करके घुमाया जाना। यह सब उस साम्प्रदायिक नफरत को उजागर करता है। जिसके कारण सभी मानवीय व नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ। पहले महिलाओं की शालीनता और शुद्धता को घर तक सीमित रखा जाता था और किसी भी अजनबी के सामने अपना चेहरा उजागर नहीं करना होता था लेकिन दंगों ने दृश्यों को पूरी तरह बदल दिया क्योंकि अब महिलाएं वासना से भरी भीड़ के सामने आ गई । स्त्रियों की निजता और सतीत्व उस अपराध के कारण नष्ट हो गया जो उन्होंने कभी किया ही नहीं था जो महिलाएं पीछे रह गई, उन्हें जुलूस की शक्ल में नग्न परेड करने के लिए मजबूर किया गया । 'जुलूस बाजार से होकर गुजरा और जुलूस के साथ–साथ अश्लील गालियाँ, भद्दे निजी हाव–भाव, थूक के छींटे, छोटे सिक्के मुरझाए फूल, सिगरेट के टुकड़े और बीड़ी जैसी अजीब वस्तुओं की एक नदी बह गई जो महिलाओं के ऊपर फेंकी गई थी। जैसे–जैसे महिलाएं पास आई, भीड़ का वह वर्ग उन्मादी हो गया, इनका बलात्कार करो।'[19]

विभाजन की उथल–पुथल के दौरान जबरन विवाह महिलाओं की पीड़ा का एक और आयाम था । महिलाओं को उस व्य क्ति के साथ रहने के लिए मजबूर किया जाता था जिसे वह पसन्द नहीं करती थी। कुछ मामलों में तो बलात्कार या छेड़छाड़ के बाद उन्हें अपने दरिदों को ही पति के रूप में स्वीकार करना पड़ता था।[20]

महिलाओं को न केवल बाहरी लोगों द्वारा बल्कि अपनों द्वारा भी प्रताड़ित पीड़ा सहनी पड़ी। इन महिलाओं को हमेशा प्रतिद्वंद्वदी समुदाय के पुरुषों के कारण नहीं बल्कि कभी–कभी अपनों के कारण ही मौत का सामना करना पड़ा। अपनी स्त्रियों की गरिमा, सम्मान और स्तीत्व को बचाने के विचार से लोगों ने अपनी बेटियों और बहनों को मार डाला। यह न केवल महिला के लिए बल्कि पूरे परिवार के लिए कष्टकारी था।[21] विभाजन का शिकार हुई महिलाओं के लिए सबसे बुरी स्थिति यह थी कि उन्हें बाजारों में खुलेआम बेच दिया जाता था। 1947 के बाद रिकवरी अभियान के हिस्से के रूप में पांच साल लाहौर में रही हिन्दुस्तानी सामाजिक कार्यकर्त्ता कमलाबेन पटेल के शब्दों में महिलाओं को ठीक उसी तरह से बेच दिया गया या उपहार में दे दिया गया था जिस तरह से संतरे व अंगूर के टोकरे बेचे व उपहार में दिये जाते थे। पटेल ने इनक हमलों व अपहरणों के बाद की परिस्थिति की जटिलता व रूखेपन का सामना किया था। पुलिसकर्मियों वे सैनिकों के साथ ही कभी–कभी उस समुदाय लोगोंकी भी सांठ–गांठ होती थी।[22]

समसामयिक समाचार पत्रों ने भी महिलाओं के प्रति भय की कहानियाँ प्रकाशित की। रघुवेन्द्र तंवर ने द ट्रिब्यून के हवाले से लिखा है कि कैसे कुछ महिलाओं का अपहरण कर लिया गया था, इसका ग्राफिक विवरण दिया गया है। उन्होंने तर्क दिया कि महिला अपहरण की प्रमुख विशेषता पाकिस्तानियों के द्वारा चलाया जाने वाले धर्म युद्ध था जिसका सबसे पहले प्रारम्भ रावलपिण्डी व मुल्तान में हुआ था। जहां अपहृत सुन्दर महिलाओं का प्रदर्शन किया जा रहा था।[23]

कुछ ऐतिहासिक लेख 1947 में पंजाब महिलाओं के अपहरण और उनकी बरामदगी के लिए भारतीय और पाकिस्तानी सरकारों द्वारा किए गए प्रयासों का संक्षिप्त विवरण देते है। अपहृत महिलाओं की बरामदगी एक कठिन कार्य था । रितु मेनन और कमला भसीन ने बॉडर्स एण्ड बांउड्रीज में एक कथा के वर्णन में कहा है कि अपहृत महिलाएं बार–बार एक पुरुष से दूसरे पुरुष के पास जाती रहती है।

**पुतर औरत दा की ऐ**

**औ तो वर्ती जांदी ऐ**
**हमेशा भांवे अपने होन**
**भांवे पराये**

विभाजन के समय अपहृत महिलाओं की वापसी के विषय में उर्वशी बुटालिया का मानना है कि मुस्लिम परिवार हिन्दू परिवारों की तुलना में मुस्लिम महिलाओं को वापस लेने के अधिक इच्छुक थे, आंशिक रूप से ऐसा लगता है कि शुद्धता और प्रदूषण की विभिन्न धारणाओं के कारण। अभी भी ये संदेहास्पद था कि क्या हिन्दू महिलाओं को उनके परिवार के द्वारा स्वीकार किया जायेगा और फिर भी हिन्दू समाज में ऐसी लड़की को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जायेगा।[24]

**उपसंहार :**

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि भारत विभाजन ने सबसे बड़े और सबसे खूनी प्रावासन को जन्म दिया। विभाजन के दौरान कई साम्प्रदायिकता से कोई भी वर्ग अछूता नहीं रहा। इस दौरान महिलाओं के साथ सबसे ज्यादा अमानवीय व्यवहार किया गया। बलात्कार, अपहरण, खून तथा हिंसा के दर्द का दश सहन किया। महिलाओं का दूसरों के साथ–साथ अपने ही परिवार के लोगों के द्वारा भी तिरस्कार किया गया । इस समय महिला केवल बदले का साधन मात्र बनकर रह गई थी।


संदर्भ सूची

1. अमरजीत सिंह, जिन्हा, पंजाब प्रोविंशियल मुस्लिम लीग एण्ड पार्टीशन : एन एनलाइज्स, *दा पंजाब पास्ट एण्ड प्रजैन्ट*, खण्ड 31, भाग–2, पटियाला, 2005, पृ॰ 51
2. किरपाल सिंह, *दा सिक्ख एण्ड ट्रांसफर ऑफ पावर (1942–1947)*, पटियाला, 2006, पृ॰ 79
3. अमरजीत सिंह, *पूर्वोक्त*, पृ॰ 51
4. रजनी पामदत्त, *आज का भारत*, दिल्ली, पृ॰ 463
5. यास्मीन खान, *विभाजन आज और पाकिस्तान का उदय*, दिल्ली, 2009, पृ॰ 82
6. *पा× चजन्य*, 21 अगस्त, 2022, पृ॰ 18
7. यास्मीन खान, *पूर्वोद्धृत*, पृ॰ 152
8. *पा× चजन्य*, 21 अगस्त, 2022, पृ॰ 53
9. उर्वशी बुटालिया, *वाइस ऑफ वुमैन, इण्डियन रिव्यू ऑफ बुक*, खण्ड 5, नं॰ 2, 1996, पृ॰ 4–5
10. जसबीर सिंह, वुमैन, वाइलैंस एण्ड दा पार्टीशन, 1947, *दा पंजाब पास्ट एण्ड प्रजैक्ट*, खण्ड 31, भाग 2, पटियाला, 2005, पृ॰ 63

11. उर्वशी बुटालिया, कम्यूनिटी, स्टेट एण्ड जेंडर : आन वूमैन्स एजेंसी डयूरिंग पार्टीशन, *इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल विकली*, खण्ड 28, नं॰ 17, अप्रैल 24, 1993, पृ॰ 15
12. रितु मेनन और कमला भसीन, *बार्डर एण्ड बाउड्रजी : वूमैन इन इण्डियाज पार्टीशन, काली फॉर वूमैन*, न्यू दिल्ली, 1998, पृ॰ 10
13. जसबीर सिंह, *पूर्वोद्धत*, पृ॰ 106
14. सत्या, एम॰ राय, *पार्टीशन ऑफ दा पंजाब : ए स्टडी ऑफ इट्स इफैक्ट ऑन दा पॉलिटिक्स एण्ड एडमीस्ट्रेशन ऑफ पंजाब, 1947–56*, नई दिल्ली, 1965, पृ॰ 85
15. बप्सी सिंधवा, *आइस मैन कैंडी*, नई दिल्ली, 1988, पृ॰ 183
16. जसबीर सिंह, *पूर्वोद्धत*, पृ॰ 114
17. चमन नहाल, *आजादी,* दिल्ली, 1975, पृ॰ 293
18. खुशवंत सिंह, *ट्रेन टू पाकिस्तान*, पृ॰ 200
19. चमन लहाल, *पूर्वोद्धृत*, पृ॰ 248–49
20. जसबीर सिंह, *पूर्वोद्वत*, पृ॰ 68
21. बप्सी सिंधवा, *पूर्वोद्धृत,* पृ॰ 221–222
22. यास्मीन खान, *पूर्वोद्धृत*, पृ॰ 158
23. राघवेन्द्र तंवर, *रिपोर्टिंग दा पार्टिशन ऑफ पंजाब, प्रैस पब्लिक एण्ड अदर ओपीनियन*, नई दिल्ली, 2005, पृ॰ 528–29
24. पीपा वरदी, *फार्म दा एसिज ऑफ 1947, रिएमजिंग पंजाब*, नई दिल्ली, 2018, पृ॰ 179